पाठ - 37

J6568C

पंडित दीनदयाल उपाध्याय

पिलानी के बिरला कॉलेज से इंटरमीडिएट की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करके एक मेधावी बालक समाजसेवी व उद्योगपति घनश्याम दास बिरला के सामने पहुँचा। बिरला जी ने बच्चे को पुरस्कृत करते हुए पूछा-"तुम्हें क्या चाहिए, बेटा ?" बच्चे ने तत्परता से उत्तर दिया-"मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए।" बिरला जी बच्चे के उत्तर से खूब प्रसन्न हुए। उन्होंने बच्चे को स्वर्णपदक और 250 रुपये के अलावा 10 रुपये मासिक की छात्रवृत्ति प्रदान की। यही बालक आगे चलकर 'एकात्म मानववाद' के प्रवर्तक पंडित दीनदयाल उपाध्याय के रूप में जाना गया।

राजस्थान में जयपुर के धनकिया में 25 सितंबर, सन् 1916 ई0 को जन्मे दीनदयाल उपाध्याय का बचपन दुःख और संकटों के बीच बीता। जन्म के कुछ समय बाद उनकी माँ रामप्यारी उन्हें लेकर मथुरा जिले के पैतृक गाँव नगला चंद्रभान आ गईं। पिता भगवती प्रसाद रेलवे में कर्मचारी थे। पंडित दीनदयाल जब ढाई वर्ष के थे तो पिता का देहांत हो गया। जब वह सात वर्ष के हुए तो माँ भी चल बसीं।

मजबूरी में उन्हें फिर अपने पैतृक गाँव से पलायन करना पड़ा। ननिहाल में रहते हुए उन्होंने अपनी प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की पढ़ाई पूरी थी। बी0ए0 करने के लिए कानपुर के सनातन धर्म कॉलेज आ गए। आगरा के सेंट जॉन कॉलेज से अंग्रेजी साहित्य में एम0ए0 करने के दौरान वह नाना जी देशमुख के संपर्क में आ गए। बीमार ममेरी बहन की सेवा करने के कारण वह एम0ए0 द्वितीय वर्ष की पढ़ाई पूरी नहीं कर पाए। पंडित दीनदयाल समाज के लिए कुछ अलग करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने नौकरी के अवसरों को त्याग दिया और समाज सेवा के स्वप्न को लेकर भाऊराव देवरस के पास गए और स्वयं को आजीवन समाज सेवा के प्रति समर्पित कर दिया। एक निर्भीक पत्रकार, प्रखर लेखक, गहन अध्येता और संस्कृतिधर्मी के रूप में पंडित दीन दयाल उपाध्याय के योगदान को सदैव याद किया जाएगा। सन् 1947 ई0 में श्री भाऊराव देवरस की प्रेरणा से उन्होंने 'राष्ट्रधर्म' पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। 'पांचजन्य' और दैनिक 'स्वदेश' का प्रकाशन भी यहीं से शुरू हुआ। प्रेस में सामग्री देने से लेकर कंपोज करने और प्रूफ पढ़ने तक के सभी कार्य

उन्होंने किए। राष्ट्रधर्म प्रकाशन के प्रबंध निदेशक रहते हुए भी प्रेस का छोटे से छोटा काम करने में वह हिचकते नहीं थे। लेखक के रूप में 'सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य' और 'जगत गुरु शंकराचार्य' उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। 'अखंड भारत क्यों' उनकी प्रमुख कृति है। उनका विविध लेखन 15 खंडों में प्रकाशित हुआ है।

विचारक व लेखक श्यामा प्रसाद मुखर्जी पंडित दीनदयाल उपाध्याय के बारे में कहते थे- "यदि मुझे ऐसे दो दीनदयाल मिल जाएँ तो मैं देश का राजनैतिक नक्शा बदल दूँगा।"

सन् 1951 ई0 में राजनीति में आने के बाद वह भारत में सामाजिक समरसता के प्रबल पक्षकार बन गए। वह मानते थे कि यदि समाज में छुआछूत और भेदभाव घर कर गया तो यह राष्ट्र की एकता के लिए घातक होगा। एकात्म मानववाद के संदेश में ऐसे राष्ट्र की कल्पना की गई है, जहाँ विविध संस्कृतियाँ विकसित हों और एक ऐसे मानव धर्म का सृजन हो, जिसमें समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समय, अवसर और स्वतंत्रता प्राप्त हो सके। इस तरह से पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने एक विकसित व जागरूक राष्ट्र की संकल्पना दी।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीयता का आधार 'भारत माता' को मानते थे। वह कहते थे 'भारत माता' से माता शब्द विच्छेद होते ही भारत केवल एक भूखंड रह जाएगा। देशवासियों का ममत्व तो माता वाले संबंध से ही जुड़ता है।

पंडित दीनदयाल के चरित्र में उनके विचारों का अद्भुत समावेश भी दिखता है। एक बार वह वाराणसी से बलिया जा रहे थे। तृतीय श्रेणी के डिब्बे में तिल रखने की भी जगह नहीं थी। कार्यकर्ताओं ने उनका बिस्तर द्वितीय श्रेणी में लगा दिया। बलिया पहुँचने पर उन्होंने दोनों श्रेणियों के किराये का अंतर स्टेशन मास्टर के पास जमा कर दिया। महाराष्ट्र के डोंभिविली नगर में उन्होंने नगर पालिका की जीप पर बैठने से विनम्रतापूर्वक मना कर दिया था। उन्होंने कहा कि मैं यहाँ निजी कार्य से आया हूँ, अतः नगर पालिका की जीप का उपयोग उचित नहीं है। ऐसे अनगिनत प्रसंग हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जीवन और विचारों में एकरूपता थी।

स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग के प्रति उनका आग्रह बड़ा प्रबल था। उड़ीसा के बाबूराव पालधीकर ने लिखा है-"एक बार नागपुर में शेविंग के दौरान किसी ने मेरा साबुन उठाकर खिड़की से बाहर फेंक दिया। मैंने गुस्से से नजर उठाकर देखा तो सामने पंडित जी खड़े थे। वह कहने लगे-जब देशी साबुन उपलब्ध है तो विदेशी कंपनी की बनी वस्तु क्यों प्रयोग करते हो? भाई नाराज न होना! जब हम स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग का उपदेश देते हैं तो हमें स्वयं भी वैसा आचरण करना चाहिए अन्यथा हमारी बात का प्रभाव नहीं पड़ेगा।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय सच्चे अर्थों में युगदृष्टा थे। मुंबई में अपने ऐतिहासिक भाषण में उन्होंने एकात्म मानववाद की व्याख्या प्रस्तुत की थी। उन्होंने कहा था-"विश्व का ज्ञान और आज तक की संपूर्ण परंपरा के आधार पर हम ऐसे भारत का निर्माण करेंगे, जो हमारे पूर्वजों के भारत से भी अधिक गौरवशाली होगा।"

हम सभी को पंडित दीनदयाल उपाध्याय जैसे तेजस्वी, तपस्वी एवं यशस्वी युगचेता महापुरुष के सपनों के भारत का निर्माण करने का संकल्प लेना चाहिए।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. पंडित दीनदयाल उपाध्याय को बचपन में किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा ?
2. बालक दीनदयाल ने किस प्रसंग पर यह कहा था कि मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए ?
3. पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कौन-कौन सी पुस्तकों की रचना की ?
4. राष्ट्रधर्म प्रकाशन से प्रकाशित होने वाली पत्र-पत्रिकाओं का नाम बताइए ।
5. पंडित दीनदयाल उपाध्याय के चरित्र की किसी एक विशेषता के बारे में लिखिए ?
6. 'एकात्म मानववाद' से राष्ट्र की उन्नति कैसे होगी ? स्पष्ट कीजिए।
7. राष्ट्रधर्म पत्रिका का प्रकाशन किसकी प्रेरणा से दीनदयाल जी ने किया था ?
8. पंडित दीनदयाल के अनुसार राष्ट्रीयता का आधार क्या है ?
9. पंडित दीनदयाल जी के अनुसार 'एकात्म मानववाद' क्या है ?